भाषा सीखने में कहानियों का प्रभाव

शरुन सनी

यह बात व्यापक तौर पर स्वीकार की जाती है और इस क्षेत्र में शोध भी किए जा रहे हैं कि जब हम कहानियाँ सुनते हैं, तो हमारे मस्तिष्क अधिक सक्रिय होते हैं। तब भी यह प्रश्न अपनी जगह बना रहता है कि कहानी की वर्णनात्मक संरचना, जहाँ घटनाएँ क्रमिक ढंग से सामने आती हैं, का हमारी सीखने की प्रक्रिया पर इतना गहरा प्रभाव क्यों पड़ता है।

इसका जवाब एकदम सीधा-सा है : हमारे मस्तिष्क कहानियों के लिए सहज रूप से बने हैं — कहानियाँ कहने और सुनने के लिए। हर कहानी के मूल में कारण-प्रभाव सम्बन्धों की एक शृंखला होती है, जो उस क्रमिक चिन्तन के जैसी होती है जो सूचना को संसाधित करने के हमारे स्वाभाविक ढंग का आधार होता है। चाहे हम रोज़मर्रा की गतिविधियों में लगे हों, काम कर रहे हों या अपने प्रियजनों के साथ समय बिता रहे हों, हम अपने कृत्यों और व्यवहारों को समझने के लिए अपने दिमाग़ में, थोड़े समय के लिए ही सही, निरन्तर कहानियाँ बुनते रहते हैं। कहानी सुनाने की गतिविधि (स्टोरीटेलिंग) क्रमिक चिन्तन की हमारी नैसर्गिक प्रवृत्ति का उपयोग करती है और सूचना को ज़्यादा कारगर ढंग से संसाधित करने और संचित रखने में हमारी मदद करती है। यह बात विशेष रूप से उन बहुत छोटे बच्चों के सन्दर्भ में सही है जिनके मस्तिष्क अभी विकसित होने की प्रक्रिया में होते हैं और जो नई जानकारी और अनुभवों के प्रति बहुत ग्रहणशील होते हैं। यह उनका नए विचारों, अवधारणाओं और अनुभवों से परिचय कराती है और वे कारण-प्रभाव सम्बन्धों, समस्या-समाधान की युक्तियों और कार्यों के परिणामों के बारे में सीखते हैं। वे भाषिक दक्षताएँ, शब्दावली (जो सीखने वालों की याद करने तथा नए शब्दों का सन्दर्भपरक इस्तेमाल करने की दक्षता में इज़ाफ़ा करती है) और भावनाओं तथा संवेदना की अधिक गहरी समझ भी विकसित करते हैं।

इस लेख का उद्देश्य इस बात को समझना है कि विषयवस्तु को पढ़ाने के लिए कहानी सुनाने को कक्षा की रोज़मर्रा गतिविधियों में शामिल करना छोटे विद्यार्थियों में भाषायी विकास को सहयोग देते हुए सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने में कैसे एक मूल्यवान साधन हो सकता है।

इससे पहले कि हम इस विवरण की गहराई में जाएँ कि छोटे विद्यार्थियों के लिए कहानी सुनाना क्यों महत्त्वपूर्ण था और आज भी है, कहानी सुनाने की परिभाषा ज़रूरी है, क्योंकि यह किसी कहानी को ज़ोर-से पढ़ने से या पढ़ने की दूसरे क़िस्म की प्रस्तुतियों से भिन्न है। बहुत सारी परिभाषाएँ हैं, लेकिन जो एक परिभाषा बहुत स्पष्ट है, वह रोनी (1983) की है जिसमें वे कहते हैं कि, "कहानी सुनाना अपने सर्वाधिक बुनियादी रूप में वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति (कहानी सुनाने वाला), मानसिक बिम्बों, आख्यान की संरचना और स्वरों के उच्चारण या संकेतों का इस्तेमाल करता हुआ उन अन्य लोगों (श्रोताओं) तक अपनी बात पहुँचाता है जो स्वयं भी मानसिक बिम्बों का इस्तेमाल करते हैं और इस तरह मुख्यतः अपनी भाव-भंगिमाओं के माध्यम से कहानी सुनाने वाले तक अपनी बात पहुँचाते हैं, जिसके नतीजे में कहानी एक सहयोगी सृजन-प्रक्रिया के माध्यम से सामने आती है।"

भाषा की प्राथमिक कक्षाओं में, कहानी सुनाना एक गतिशील और बहुमुखी गतिविधि होती है जो सामान्य तौर पर तीन भिन्न चरणों में सामने आती है।

कहानी सुनाने के चरण

पहला, कहानी के पहले की गतिविधियाँ जहाँ बच्चों को कहानी के प्रति आकर्षित करती हैं और उससे जोड़े रखती हैं, वहीं सम्बन्धित भाषा और शब्दावली से उनका परिचय कराती हैं या उन्हें सुदृढ़ बनाती हैं। फिर, कहानी के दौरान जारी गतिविधियाँ बच्चों का ध्यान एकाग्र रखती हैं और क़िस्से की उनकी समझ का मार्गदर्शन करती हैं और उसे सुदृढ़ बनाती हैं। अन्त में, कहानी सुनाए जाने के बाद की गतिविधियाँ बच्चों को कहानी की भाषा का सक्रिय रूप से प्रयोग करने और निजी प्रतिक्रियाओं को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

इन तीन चरणों के माध्यम से बच्चे विभिन्न अवस्थाओं से और विषयवस्तु के दोहराव की प्रक्रिया से गुज़रते हैं। बल्कि कई रूपों में कहानी सुनाने की प्रक्रिया भाषा की गहरी समझ विकसित करने, अपनी शब्दावली का विस्तार करने और आलोचनात्मक चिन्तन की दक्षताएँ विकसित करने की और इस दौरान कहानियों की सम्मोहक शक्ति का आनन्द लेने की समग्र पद्धति है।

कभी-कभी शिक्षक यह मान लेते हैं कि उनकी कक्षा, स्वाभाविक तौर पर, समृद्ध भाषा का इस्तेमाल करने और सुनने के अवसर उपलब्ध कराती है। यह बात हमेशा सही नहीं होती। शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे ऐसी सुविचारित योजनाएँ तैयार करें जो बच्चों को उस तरह की भाषा से जोड़ें जैसी भाषा साक्षरता शिक्षा से जुड़ी हो (फ्लिन, 2016)। और कहानी सुनाना ऐसी ही एक गतिविधि है। कहानी सुनाने की गतिविधियों के दौरान शिक्षकों को शब्द-क्रीड़ा, तुकबन्दी, ऑनसेट (onset) और राइम (rime)[1] जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का और एक शब्द के भीतर विभिन्न ध्वनियों को अलगाने का अवसर प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे में सुविकसित ध्वन्यात्मक जागरूकता आती है और अन्ततः हिज्जे करने तथा अर्थ करने की उत्तम दक्षताएँ पैदा होती हैं (सोडरमैन और अन्य 2013)।

जैसे ही बच्चा लगभग 100-50 शब्द अर्जित कर लेता है, भाषा बहुत तेज़ी-से विकसित होती है (सोडरमैन और अन्य, 2013)। बच्चे प्रायः चार-पाँच साल की उम्र में अपने बोलने में प्रवाह लाने लगते हैं और इसमें अत्यन्त सफल होते हैं (ब्रायन, 1996; कैमबर्न, 1986)। बोलना बच्चे का सबसे मज़बूत पक्ष होता है, लेकिन संवाद के लिए इस्तेमाल की जाने वाली उनकी भाषा अकादमिक होने की बजाय व्यावहारिक ज़्यादा होती है। वे भाषा का विश्लेषण करने की बजाय उसका इस्तेमाल कर रहे होते हैं। सामान्यतः, कहानी सुनाने की गतिविधि इन बातों के साथ एकदम सटीक बैठती है, क्योंकि वह प्राथमिक तौर पर मौखिक भाषा पर आधारित होती है। यह मौखिक भाषा में बच्चे की दक्षता का अकादमिक ढंग की बजाय व्यावहारिक ढंग से इस्तेमाल करती है और, इसलिए हर बच्चे की पहुँच में होती है।

सीखने के एक साधन के रूप में, कहानी सुनाने का इस्तेमाल पाठ्यक्रम के सभी क्षेत्रों में विषयवस्तु को साझा करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन अँग्रेज़ी भाषा की कक्षा के लिए उसका विशेष रूप से बहुत अधिक मूल्य है क्योंकि यह मुद्रित साहित्य के प्रति जागरूकता को बढ़ाती है। कहानी-पाठ के दौरान जब अध्यापक पुस्तक के पन्ने पर अपनी अँगुली सरकाते हुए धीरे-धीरे पढ़ रहा होता है तो बच्चे उसका अनुसरण करते हैं। शब्दों के अर्थ निकालने का पहला चरण इस बात को समझना है कि पन्ने पर अंकित गद्य सामान्यतः बाएँ से दाएँ लिखा गया होता है। बच्चों को कहानी सुनाने की प्रक्रिया में सह-रचना के लिए भी आमंत्रित किया जा सकता है।

कहानी सुनाने की गतिविधि भाषिक रूप से समृद्ध वातावरण की गुंजाइश देती है। इसमें उन अवसरों के लिए भी ध्यान रखा गया होता है जो बच्चों को भाषा के विस्तृत इस्तेमाल (वयस्क और बच्चे के बीच परस्पर वार्तालाप) की और विचारों में विस्तार करने की गुंजाइश देते हैं। उदाहरण के लिए, जब बच्चों के सीखने के तात्कालिक वातावरण में मौजूद वयस्क लम्बी और ज़्यादा जटिल बातें बोलते हैं तथा वाक्य-रचना की दृष्टि से जटिल भाषा का प्रयोग करते हैं, तो इससे बच्चों में लम्बे वार्तालापों में भाषा का इस्तेमाल करने और वाक्य-रचना की दृष्टि से जटिल कथनों का इस्तेमाल करने की क़ाबिलियत पैदा होती है। इस क़िस्म की सीखने की प्रक्रिया इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे नए शब्द सीखने के लिए सन्दर्भपरक संकेतों का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें वाक्य-संरचना द्वारा उपलब्ध कराए गए संकेत शामिल होते हैं। वाक्य रचना के विविध रूपों के साथ परिचय में भाषा की समझ का पूर्वानुमान निहित होता है और वह अन्ततः पढ़ने की समझ से जुड़ा होता है।

इस उपलब्धि के बाद सकर्मक क्रियाओं और सरल क़िस्म के सूत्रात्मक पदों (I want, Stop it, Don't want that, Please) को जोड़ दिया जाता है। जैसे ही एक बार पर्याप्त ग्रहणशील शब्दावली और इस बात का प्रमाण जुट जाता है कि दूसरों के साथ संवाद अपने अत्यन्त स्वभाविक रूप में हो रहा है और अभ्यास के लिए प्रोत्साहन और अवसर मिल रहे हैं, वैसे ही बच्चे सामान्यतः तेज़ रफ़्तार प्रगति के रास्ते पर चल पड़ते हैं (कोस्टेल्निक, सोडेरमैन और व्हाइरेन, 2013)।

परिचित आधार

इन आरम्भिक चरणों के दौरान अध्यापकों के लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है कि बच्चे जिन चीज़ों से परिचित हैं उन्हें सुनें, देखें और पढ़ें। एक उदाहरण के तौर पर, कक्षा में जो कुछ कहानी के रूप में पढ़ा जा रहा हो, उसे उन बातों को भी सहारा देना चाहिए जिन पर सर्कल टाइम या छोटे-छोटे समूह संवादों के दौरान चर्चा हो रही हो। इस क़िस्म की कहानी को ही लें, जो नीचे दी गई है :

एक उजली सुबह, जब सूर्य पृथ्वी की ओर देखकर मुस्करा रहा था, एक छोटे-से बीज में, जिसे मीना ने अपने बग़ीचे में बोया था, जीवन प्रस्फुटित हो उठा। उस अंकुर की छोटी-छोटी-सी पत्तियाँ काली मिट्टी को धक्का देती रहीं और एक दिन जब उन्होंने धक्का दिया, तो दो हरी पत्तियाँ बीज की फल्ली में से बाहर निकल आईं। मीना ने उन्हें रोज़ पानी दिया और जल्दी ही वह अंकुर एक पौधा बन गया। जब वह पौधा बड़ा हुआ, तो पौधे की नोक पर एक छोटी-सी कली की ओर उसका ध्यान गया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, कली धीरे-धीरे खुलने लगी और एक ख़ूबसूरत सुबह, एक चमकीले, पीले सूरजमुखी ने मीना का स्वागत किया।

इस कहानी का इस्तेमाल न सिर्फ़ इसकी विषयवस्तु के बारे में बल्कि भाषा के बारे में भी शिक्षा देने के लिए किया जा सकता है। इसका एक तरीक़ा यह है कि एक विशेषता चार्ट तैयार किया जाए। विशेषता चार्ट वे सशक्त उपकरण होते हैं जो अभिव्यंजक शब्दावली गढ़ने में और उस भाषा के शब्द सीखने में बच्चों की मदद करते हैं जिसे वे अर्जित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। ऊपर अंकित कहानी में, शिक्षक विद्यार्थियों को वास्तविक सूरजमुखी दिखा सकता है, बच्चों को अपने बीज बोने तथा उन्हें उगते हुए देखने को प्रेरित कर सकता है। यह सब एक कहानी के माध्यम से किया जा सकता है। विशेषता चार्ट के माध्यम से, अध्यापक न सिर्फ़ विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को, बल्कि उन शब्दों को भी प्रकाश में ला सकता है, जो फूल का वर्णन करते हैं जैसे 'सुन्दर', 'पीला', 'चमकीला' आदि। बेशक, ऐसे अनेक तरीक़े हैं जिनमें कोई कहानी सीखने के लिए उपयोगी हो सकती है।

कहानियाँ और कहानी सुनाने की गतिविधियाँ ख़ासतौर से उस समय बहुत कारगर होती हैं जब छोटे बच्चों को अँग्रेज़ी पढ़ाई जा रही होती है क्योंकि वे वास्तविक जीवन के सन्दर्भों में स्पष्ट और सुगम भाषा उपलब्ध कराती हैं। इसके अतिरिक्त, कहानियाँ प्रेरणादायी होती हैं और वे बच्चों की कल्पना को प्रेरित कर उन्हें विभिन्न विषयों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम बनाती हैं। कहानियों का इस्तेमाल करते हुए, विद्यार्थी सन्दर्भीकृत भाषा को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि वह एक परिचित सन्दर्भ में प्रस्तुत की गई होती है और उसे चित्रों तथा रेखांकनों का सहारा दिया गया होता है। भाषा को एक विशेष स्थिति में रखते हुए विद्यार्थी इस्तेमाल की गई भाषा के अर्थ और सन्दर्भ को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। अँग्रेज़ी पढ़ाने का यह तरीक़ा सीखने के एक अधिक सामंजस्यपूर्ण अनुभव की रचना करता है जिससे विद्यार्थियों को भाषा को अपने रोज़मर्रा जीवन से जोड़ने में मदद मिलती है।

एक अनिवार्य दक्षता है सुनना, जिसे छोटी उम्र के विद्यार्थी अक्सर सहज ढंग से विकसित कर लेते हैं, लेकिन जिसमें हो सकता है कि उन्होंने स्पष्ट तालीम हासिल न की हो। सुनना छोटे विद्यार्थियों के लिए सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्व की वह दक्षता है जिसे उन्हें विकसित करना होता है। बच्चे कक्षा में प्रवेश करने से पहले ही यह विशेष दक्षता हासिल कर चुके होते हैं, क्योंकि सुनना सम्प्रेषण व संवाद को सीखने का बुनियादी पक्ष है। कहानी सुनाना बच्चों की सुनने की विकसित दक्षताओं से लाभान्वित होने का और उन्हें सीखने की प्रक्रिया में समाहित करने का एक कारगर तरीक़ा है। शिक्षक इस सुविधा का लाभ उठाते हैं, क्योंकि वे उन दक्षताओं को और विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं जो विद्यार्थियों के पास पहले से मौजूद हैं और जो कि पढ़ने और लिखने की उन दक्षताओं के विपरीत होती हैं जो औपचारिक शिक्षण और अनेक हस्तक्षेपों की माँग करती हैं।

> सुनना निष्क्रिय गतिविधि नहीं है; यह अच्छे-ख़ासे संज्ञानात्मक परिष्कार की माँग करती है। बच्चे जब कोई कहानी सुनते हैं, तब उन्हें उन चीज़ों का परिष्कार करना अनिवार्य होता है जिन्हें वे सुनते और देखते हैं, साथ ही उन्हें प्रस्तुत की जा रही भाषा और विषयवस्तु को समझना भी ज़रूरी होता है। बच्चे कहानी को समझ सकें, इसमें उनकी मदद के लिए अध्यापकों को 'सोचने के समय' की गुंजाइश देनी चाहिए, ताकि बच्चों को वह समय मिल सके जो जटिल भाषिक और संज्ञानात्मक परिष्कार के लिए ज़रूरी होता है।

कहानी सुनाना एक आधारभूत उपकरण है जो भाषा सीखने में मदद देता है और शिक्षकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे इस शाश्वत उपकरण का निरन्तर उपयोग करते रहें। कहानी सुनाने के लिए उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी या कहानी की महँगी क़िताबों की ज़रूरत नहीं होती। इसकी बजाय, सीखने का एक समृद्ध वातावरण रचने के लिए, अध्यापक और विद्यार्थी आपसी सहयोग करते हुए अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से कहानियों की सह-रचना कर सकते हैं।

यहाँ विभिन्न आयु के विद्यार्थियों के लिए कहानियों की कुछ ऐसी क़िताबें सुझाई जा रही हैं जिनकी विषयवस्तु प्राकृतिक दुनिया से ली गई है :

तेजस्विनी आप्टे और सुजाता पद्मनाभन द्वारा रचित कल्पवृक्ष की *द पूप बुक*

तान्या मजूमदार द्वारा रचित कल्पवृक्ष की *द मॉन्स्टर हू कुड नॉट क्लाइम्ब ए ट्री*

आरती मुथन्ना सिंह और ममता नैनी दवारा रचित कराडी टेल्स की *वत्सला लव स्नेक्स*

शोभा विश्वनाथ द्वारा रचित कराडी टेल्स की *द इन्सेक्ट बॉय*

अंशुमनी रुद्रा द्वारा रचित कराडी टेल्स की *दोरजेज़ स्ट्राइप्स*

Endnotes

1. ऑनसेट-राइम शब्दों को दो हिस्सों में बाँटने या तोड़ने की प्रक्रिया है : ऑनसेट किसी भी शब्द की प्राथमिक ध्वन्यात्मक इकाई है, और राइम उसके बाद आने वाले अक्षरों की लड़ी है। राइम सामान्य तौर पर एक स्वर और एक अन्तिम व्यंजन ध्वनि से मिलकर बनती है।

References

Bryen, D N (1982). *Inquiries into Child Language*. Boston, MA: Allyn and Bacon

Cambourne, B (1986). "Rediscovering Natural Literacy Learning: Old Wine in a New Bottle." Paper presented at the E.S.L. Conference, Singapore

Flynn, E E (2016). Language-Rich Early Childhood Classroom: Simple but Powerful Beginnings. *The Reading Teacher*, 70(2), 159–166 http://www.jstor.org/stable/44001420

Roney, R C (2009). A Case for Storytelling in the K-12 Language Arts Curriculum. *Storytelling, Self, Society*, 5(1), 45–54. http://www.jstor.org/stable/41943299

Soderman, A K, Clevenger, K. G., & Kent, I. G. (2013). Using Stories to Extinguish the Hot Spots in Second Language Acquisition, Preschool to Grade 1. YC *Young Children*, 68(1), 34–41. http://www.jstor.org/stable/42731300



शरून सनी अँग्रेज़ी भाषा के शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत एक पेशेवर अध्यापिका और शिक्षक प्रशिक्षक हैं। सृजनात्मकता की शोधकर्ता और लेखन की शिक्षिका के रूप में वे सृजनात्मकता, सुन्दरता और सरलता को एक साथ लाने की कोशिश करती हैं। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में पढ़ाती हैं। उनसे *sharoon.sunni@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय